

135

माननीय अध्यक्ष महोदय, राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश ग्वालियर के न्यायालय में

उद्देश्य - 9143-PDX-16

निगरानी प्रकरण क्रमांक 1745-पी.बी.आर./99

शिवराम पिता कन्हैया व अन्य <sup>वर्द्ध</sup> ~~वर्द्ध~~  
सौतेले पिता ~~शिवराम~~ <sup>शिवराम</sup> ~~पिपुरी~~ <sup>पिपुरी</sup>  
विरुद्ध <sup>तह. व जिला अदालत (प. 9)</sup>

— प्रार्थीगण

पंडु पिता दशरथ व अन्य।

— प्रत्यर्थीगण

~~शिवराम पिपुरी तह. व जिला अदालत (प. 9)~~

आवेदन पत्र प्रकरण को पुनर्स्थापित किये जाने बाबद

वकात होकर कागज

आज दि. 15-9-16 को

प्रार्थी शिवराम पिता कन्हैया मृत तर्फ वारिसान की ओर से निवेदन है कि :-

1- यह कि, प्रार्थी के द्वारा श्रीमान् के समक्ष श्रीमान् अपर आयुक्त महोदय इंदौर संभाग इंदौर द्वारा प्रकरण क्रमांक 150/अपील/1998-99 में निम्निके पंजीबद्ध आदेश के विरुद्ध एक निगरानी प्रस्तुत की गई थी। जो राजस्व मण्डल ग्वालियर 28/09/1999 को पारित आदेश के विरुद्ध एक निगरानी प्रस्तुत की गई थी। जो निगरानी प्रकरण क्रमांक 1745-पी.बी.आर./99 पर पंजीबद्ध होकर उक्त प्रकरण में प्रार्थी के वारिसों की कार्यवाही न किये जाने के कारण दिनांक 16/02/2016 को पारित आदेश के द्वारा निरस्त कर दिया गया।

पंजीबद्ध आदेश कोट  
राजस्व मण्डल ग्वालियर

न्यायालय राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश-ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्रकरण क्रमांक रेस्टो 9173-पीबीआर/16

जिला खरगौन

स्थान तथा दिनांक

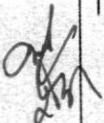
कार्यवाही तथा आदेश

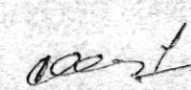
पक्षकारों एवं अभिभाषकों  
आदि के हस्ताक्षर

27-7-2017

आवेदकगण के विद्वान अभिभाषक द्वारा प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया गया । यह पुर्नस्थापन आवेदन पत्र इस न्यायालय द्वारा पारित आदेश दिनांक 16.2.2016 क विरुद्ध इस न्यायालय में दिनांक 15.9.2016 लगभग 6 माह विलम्ब से प्रस्तुत किया गया है । इस सम्बन्ध में आवेदकगण के विद्वान अभिभाषक का मुख्य तर्क रहा कि संतोष के पिता स्वर्गीय शिवराम प्रकरण को देखते थे और उनकी मृत्यु वर्ष 2013 में हो गई एवं आवेदक को प्रकरण की कोई जानकारी नहीं थी, जब वह तहसीलदार के समक्ष लम्बित प्रकरण में नियत पेशी दिनांक 7.9.2016 को उपस्थित हुए, तब प्रकरण की जानकारी हुई । प्रत्युत्तर में अनावेदक के विद्वान अभिभाषक द्वारा तर्क प्रस्तुत किया गया कि इस न्यायालय में द्वारा प्रकरण निरस्त करने के 3 वर्ष पूर्व शिवराम की मृत्यु को चुकी थी, तथा आवेदक को इस न्यायालय के प्रकरण की जानकारी थी क्योंकि आवेदक के अभिभाषक प्रारंभ से ही उपस्थित होते रहे हैं ।

2/ इस न्यायालय द्वारा प्रकरण निरस्त करने के 3 वर्ष पूर्व शिवराम की मृत्यु को चुकी थी । 3 वर्ष तक प्रकरण की जानकारी आवेदक को नहीं होना विश्वसनीय नहीं है क्योंकि उभय पक्ष एक ही ग्राम के निवासी हैं, और उभय पक्ष के मध्य विवाद की जानकारी मृतक के परिवार को न रही हो यह संभव नहीं है । अतः विलम्ब का कारण समाधानकारक नहीं होने से विलम्ब क्षमा किये जाने का औचित्य नहीं है । फलस्वरूप यह पुर्नस्थापन आवेदन पत्र अवधि बाह्य होने से निरस्त किया जाता है ।



  
(मनोज गोयल)  
अध्यक्ष